❁ 30 अगस्त 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❁

✺ ज्ञान-

1] आगे चलकर बहुतों का डायरेक्शन मिलेगा कि तुम ब्रह्माकुमार-कुमारियों के पास जाओ तो तुमको यह वैकुण्ठ का प्रिन्स बनने का ज्ञान देंगे। यह इशारा उन्हों को ब्रह्मा के साक्षात्कार से मिलेगा। अक्सर करके ब्रह्मा और श्रीकृष्ण का ही साक्षात्कार होता है। जैसे आदि में साक्षात्कार का पार्ट चला, ऐसे ही अन्त में भी चलने वाला है।

2] विष्णु को स्वदर्शन चक्र दिखाते हैं ना। उनका अर्थ भी बाप ने अब समझाया है। स्व अर्थात् आत्मा को दर्शन हुआ 84 जन्मों के चक्र का। तो वह चक्र भी फिराना पड़े। तुम जानते हो हम 84 का चक्र लगाकर घर जायेंगे। फिर वहाँ से आयेंगे सतयुग में पार्ट बजाने। फिर का 84 चक्र लगायेंगे। विष्णु को कोई चक्र होता नहीं। वह तो है सतयुग का देवता। विष्णुपुरी कहो या लक्ष्मी-नारायण की पुरी कहो, स्वर्ग कहो। स्वर्ग में लक्ष्मी-नारायण का राज्य था। अगर राधे-कृष्ण का राज्य कहते हैं तो भूल करते हैं। राधे-कृष्ण का राज्य तो होता नहीं क्योंकि दोनों अलग-अलग राजाई के प्रिन्स-प्रिन्सेज थे, राजाई के मालिक तो फिर स्वयंवर के बाद बनेंगे। तो यह जो विष्णु को चक्र दिया है, यह चक्र है तुम्हारा। तो यहाँ जब बैठते हो तो सिर्फ शान्ति में नहीं बैठना है। वर्सा भी याद करना है इसलिए यह चक्र है।

3] तुम बुढ़े होते हो तो भी ज्ञान है हम गर्भमहल में जाकर प्रवेश करेंगे। अभी जाते हैं गर्भ जेल में। वहाँ तो गर्भ महल होता है। वहाँ पाप तो करते नहीं जो सजा भोगनी पड़े। यहाँ तो पाप करते हैं, जिस कारण सजा भोग कर बाहर निकलते हैं तो फिर पाप शुरू कर लेते हैं। यह है पाप आत्माओं की दुनिया। यहाँ तो दु:ख ही होता है। वहाँ दु:ख का नाम नहीं।

4] तो एक आंख में शान्तिधाम, दूसरी आंख में सुखधाम रखो। भल तुम जन्म-जन्मान्तर जप-तप आदि करते आये हो परन्तु वह ज्ञान तो नही हैं ना। वह है भक्ति उसमें कोई युक्ति भी नही मिलती कि तुम ऐसे सतोप्रधान बन सकते हो। कोई भी नही जानते।

5] बाप को तो सिर्फ शिव ही कहा जाता है। तुम आत्मायें जन्म-मरण में आती हो तो शरीर का नाम बदलता है। शिवबाबा तो जन्म-मरण में आता नहीं। वह सदैव शिव ही है। बुरी (बिन्दी) जब लिखते हैं तो कहते है शिव। बिन्दी आत्मा तो है बिल्कुल सूक्ष्म। आत्मा का अगर साक्षात्कार होता तो भी किसको समझ में नहीं आता। देवी को देख खुश हो जायेंगे। अच्छा, फिर क्या, प्राप्ति तो कुछ नहीं, अर्थ नहीं। सिर्फ नौधा भक्ति की, दर्शन किया तो उसमें ही खुश हो जाते हैं। बाकी मुक्ति-जीवनमुक्ति की तो बात ही नहीं है। वह है सब भक्ति मार्ग। यहाँ यह है ज्ञान मार्ग। यहाँ अक्सर करके साक्षात्कार होता है ब्रह्मा का, फिर श्रीकृष्ण का होगा। कहेंगे इस ब्रह्मा के पास जाओ तो तुम कृष्णपुरी वा वैकुण्ठ में जायेंगे। लक्ष्मी-नारायण का भी साक्षात्कार हो सकता है। ऐसे नहीं, साक्षात्कार हुआ माना सद्गति हो गई। यह सिर्फ इशारा मिलता है, यहाँ जाओ।

6] बाप कहते हैं तुमको कैसे कमल फूल समान बनना है। परन्तु स्थाई तो तुम नहीं रहते हो इसलिए अलंकार विष्णु को दे दिये हैं। नहीं तो देवताओं को शंध आदि की दरकार है क्या। मुख से सुनाने को शंख ध्वनि कहा जाता है। कमल का राज भी बाप समझाते हैं। तुम ब्राह्मणों को इस समय कमल फूल समान बनना है। गदा है 5 विकारों रूपी माया को जीतने की।

7] बाप समझाते हैं तुम तो वास्तव में आदि सनातन देवी-देवता धर्म के हो, परन्तु पतित बन गये हो इसलिए अपने को देवता कहला नहीं सकते। वह धर्म ही प्राय: लोप हो गया है। मनुष्य कितने विकारी क्रिमिनल आई वाले हैं।

8] आत्मा का तख्त यह भ्रकुटी है। इसको कहा जाता है अकाल तख्त। अकाल आत्मा इस तख्त पर विराजमान है। यह तो मिट्टी का पुतला है। सारा पार्ट आत्मा में ही भरा हुआ है। बाप कहते हैं मैं 5 हजार वर्ष के बाद आता हूँ, तुम बच्चों को वर्सा देने। तुम जानते हो हम आये हैं हेल्थ, वेल्थ, हैपीनेस का वर्सा लेने।

9] यह 84 का चक्र अच्छी रीति बुद्धि में बिठाना है। यह है स्वदर्शन चक्र। बाकी चक्र से कोई का गला आदि नहीं काटना है। शास्त्रों में फिर कृष्ण के लिए हिंसक बातें लगा दी हैं। सबको स्वदर्शन चक्र से मारा। यह भी ग्लानि हुई ना। कितना हिंसक बना दिया है। तुम डबल अहिंसक बनते हो। काम कटारी चलाना यह भी हिंसा है। देवताओं को तो पवित्र

...2

कहा जाता है। योगबल से जबकि विश्व के मालिक बन सकते हो तो योगबल से बच्चे क्यों नहीं पैदा हो सकते हैं। साक्षात्कार होगा अब बच्चा होना है। बाबा तो समझते हैं अभी यह पुराना शरीर छोड़ेंगे और गोल्डन स्पून इन माऊथ। तुम भी समझते हो हम अमरलोक में जन्म लेंगे तो गोल्डन स्पून इन माउथ होगा। गरीब प्रजा भी चाहिए ना। दु:ख की कोई भी बात होती ही नहीं है। प्रजा के पास थोड़ेही इतना धन माल आदि होता है। बाकी हाँ, सुख होगा, आयु बड़ी होगी। राजा, रानी, साहूकार, प्रजा सब चाहिए ना।

✺ योग-

1] बाप कहते हैं तुम लाइट हाऊस भी हो, बोलता चलता लाइट हाऊस हो। एक आंख है शान्तिधाम, एक आंख में है सुखधाम। दोनों को याद करना पड़ता है। याद से तो पाप कटने हैं। घर को याद करने से घर में चले जायेंगे फिर चक्र को भी याद करना है।

2] बाप उपाय बताते हैं मामेकम् याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। श्रीमत पर चलकर पतित-पावन बाप को याद करो। दूसरा तो कोई पतित-पावन है नहीं सिवाए एक बाप के। बाप कहते हैं मुझे बुलाते ही इसलिए हैं कि हम सबको इस शरीर से छुड़ाकर पावन दुनिया में ले चलो। तो बाप ही आकर सब आत्माओं को पतित से पावत बनाते हैं क्योंकि अपवित्र आत्मायें तो घर में अथवा स्वर्ग में जा नहीं सकती हैं। बाप कहते है पवित्र बनना है तो मुझे याद करो। याद से ही तुम्हारे पाप कटते जायेंगे। यह मैं गैरन्टी करता हूँ। बुलाते हैं– हे पतित-पावन आओ। हमको पावन बनाकर नई दुनिया में ले चलो। तो कैसे जायेंगे? कितनी सीधी बात बताते हैं। बाप की सहज नॉलेज और सहज बात है। कहते हैं कामकाज करते हुए मुझे याद करो। भल नौकरी आदि करो, भोजन बनाओ तो भी याद में रहकर, तो भोजन भी शुद्ध होगा इसलिए गाया जाता है ब्रह्मा भोजन के लिए देवताओं को भी दिल होती है।

3] गीता में भी भगवानुवाच है ना– हे बच्चे, देह सहित देह के सब सम्बन्धों को छोड़ो। अपने को आत्मा समझ मामेकम् याद करो। तुम्हारा सच्चा-सच्चा खुदा दोस्त वह है।

✺ धारणा-

1] अब बाप समझाते हैं– बच्चे, सिविल आई बनो। जब तक क्रिमिनल आई जाती है तब तक तुम पतित हो। अपने को भाई-भाई समझो तो वह क्रिमिनल दृष्टि पड़ जायेगी। हम आत्मा भाई-भाई हैं। एक बाप से वर्सा ले रहे हैं।

2] दुनिया वाले कहते हैं मन घोड़ा है जो बहुत तेज भागता है, लेकिन आपका मन इधर उधर भाग नहीं सकता क्योंकि श्रीमत का लगाम मजबूत है। जब मन-बुद्धि साइडसीन को देखने में लग जाती है तो लगाम ढीला होने से मन चंचल होता है इसलिए जब भी कोई बात हो, मन चंचल हो तो श्रीमत का लगाम टाइट करो तो मंजिल पर पहुँच जायेंगे। बालक सो मालिक हूँ- इस स्मृति से अधिकारी बन मन को अपने वश में रखो।

3] सदा निश्चय हो कि जो रहा है वो भी अच्छा और जा होने वाला है वो और भी अच्छा तो अचल-अडोल रहेंगे।

✺ सेवा-

1] मीठे बच्चे– तुम हो चैतन्य लाइट हाऊस, तुम्हें सबको बाप का परिचय देना है, घर का रास्ता बताना है।

2] तुम हो रूहानी पण्डे। सबको राय देते हो– बाप को याद करो तो शान्तिधाम चले जायेंगे। साधू सन्त आदि सब शान्तिधाम में जाने के लिए ही मेहनत करते हैं। परन्तु जा कोई भी नहीं सकते। जायेंगे फिर सारा होल लॉट इकट्ठा।